Vithala Arati

|| श्री विद्याल आरती ||

आरती अनंतभुजा । विठो पंढरीराजा ॥
न चलती उपचार । मनं सारिली पूजा ॥ धृ ॥

परेश पार नाहीं । न पडे निगमा ढारां ॥
भूलता भक्तिभावं । लाहों चेतला देहीं ॥ आरती ॥ ॥

अनिवार्या शुद्ध बुद्ध । उभा राहिला नीट ॥
रामाजनांदनीं । पायीं जोडिली बीत ॥ आरती ॥ ॥

इति

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com
Last updated January 26, 1999